छाजहड़गोत्रीय ओसवालवंश का इतिहास

भँवरलाल नाहटा...

ओसवाल, श्रीमाल, पोरवाड़ आदि जैन-जातियों का इतिहास प्रायः अंधकाराच्छन्न है। यद्यपि कहा जाता है कि भगवान् महावीर के ७० वर्ष के पश्चात् पार्श्वनाथ-संतानीय श्री रत्नप्रभसूरिजी ने ओसियाँ नगर में ओसवाल बनाए, पर ऐतिहासिक प्रमाणों का अभाव हमें यह बात मानने को विवश नहीं कर सकता। पार्श्वनाथ -परम्परा भगवान महावीर के शासन में विलीन होचुकी थी। जैनागमों में पार्श्वापत्यों के उल्लेख केवल उनके पूर्व संबंध के द्योतक हो सकते हैं। वस्तुतः चैत्यवासी ढीले पासत्थे वर्ग की परम्परा, बारंबार वे ही बँधे-बँधाए नाम हमें उनकी प्रामाणिकता में संदिग्ध ही प्रतीत होते हैं। प्राचीन शिलालेख, प्रतिमाओं के अभिलेख, स्थविरावलियाँ, आगम-पंचांगी-टीका, चूर्णि, निर्युक्ति, भाष्य आदि में कहीं भी उन जाति के श्रावकों की, दीक्षित मुनि, आचार्य वर्ग के नामों की गंध तक नहीं पायी जाती, जबकि मथुरा आदि के शिलालेख अन्य जाति के लोगों का अस्तित्व प्रत्यक्ष बतलाते हैं।

ओसियाँ का मंदिर नौवीं शताब्ती से पूर्व का नहीं है। स्वर्णगिरि, जालौर, साँचोर, आदि के मंदिर, कक्कुक, बाउक के अभिलेखादि जो भी प्रमाण प्रस्तुत करें, हम विक्रमीय छठी शताब्दी से पूर्व इन जातियों का अस्तित्व प्रमाणित करने में अक्षम है। उपकेशगच्छचरित्रादि सभी ग्रन्थ तेरहवीं, चौदहवीं शताब्दी के परवर्ती हैं। कुछ ताड़पत्रीय ग्रन्थ प्रशस्तियां भी हमें परवर्ती काल की उत्पत्ति ही सूचित करती हैं। ऐसी स्थिति में हमें द्विसहस्राब्दी से पूर्व की घटना मानने का मोह त्यागकर वास्तविक सतह पर आने के लिए प्रामाणिकता की ओर ध्यान देना चाहिए। भगवान महावीर के समय में हर जाति के लोग जैन होते थे, सर्वव्यापक जैनधर्म को तलवार के बल पर नष्ट किया गया, दक्षिण भारत का इतिहास एवं शिल्प इसके प्रत्यक्ष उदाहरण हैं। जैनाचार्यों ने हमें समाज-व्यवस्था दी जिससे आज हम उनके उपकारों से जैन हैं, अपने प्रयत्न से नहीं।

राय बहादुर गौरीशंकर हीराचंद ओझा, श्री पूरणचंद नाहर आदि इतिहासविदों की राय मानकर हमें प्रामाणिक इतिहास का आश्रय लेना चाहिए। क्योंकि अपनी गुरु यजमानी कायम करने के लिए जो मनगढ़ंत संवादों की सृष्टि, भ्रांत धारणाएँ इतिहास में घालमेल हो गई हैं, उनमें से तथ्यांश निकालना बड़ा कठिन हो रहा है। ऐसी स्थिति में श्री सोहनलालजी भणशाली का प्रामाणिक शिलालेखी प्रयत्न हमें इतिवृत्त सत्यांश के निकट ले जाने में सक्षम है। कुछ ज्ञान-भंडारों में प्राप्त कवित्त छंदादि भी पाए जाते हैं। भाटों की बहियों में उनके वंश-परम्परा में मिले हुए सत्यांशों की सम्प्राप्ति के भी कथंचित् परवर्ती इतिवृत्त-संकलन में सहायक होने को नकारा नहीं जा सकता।

पूर्वकाल में बड़े-बड़े विद्वान् ग्रन्थकार होते हुए भी उन्होंने इस विषय की ग्रन्थ-रचना क्यों नहीं की? यदि पहले से इस परिपाटी को कायम रखा जाता तो हमें इतिहास तो आसानी से मिल जाता पर एक उदात्त भावना का रहस्य जो पूर्वाचार्यों की दीर्घदृष्टि में था उससे हम वंचित रह जाते। श्री अभयदेवसूरिजी ने स्वधर्मीकुलक में लिखा है कि एक नवकार मन्त्र को धारण करने वाला स्वधर्मी बन्धु हमारे सगे भाई से भी बढ़कर है। इस भावना में अपना उत्पत्ति-इतिहास वरीयता और कनिष्ठता की भावना उत्पन्न कर देता अतः यह बात भी कथंचित् स्वीकार्य कही जा सकती है।

अपने वंश का गौरव, पूर्वजों के कार्यकलाप आदि जानना आवश्यक है, अतः हमें प्रामाणिक साधनों द्वारा जितना भी हो सके प्रकाश में लाना अभीष्ट है। ओसवाल जाति में जिन-जिन गोत्रों का इतिवृत्त प्रचुर और प्रामाणिक उपलब्ध है, उनमें से अपनी रुचि के अनुसार संग्रह कर प्रकाश में लाने का सत्प्रयत्न होना चाहिए। ऐसे गोत्रों में बोथरा-बच्छावत, नाहटा-बाफणा, रांका-सेठ, मालू, दूगड़, नाहर आदि अनेक इतिहास हाथ में लिए जा सकते हैं। यहाँ राठौड़-राष्ट्रकूट वंश से उद्भूत छाजहड़वंश का इतिहास दिया जा रहा है।

सर्वप्रथम आज से ठीक पाँच सौ वर्ष पूर्व लिखित सचित्र स्वर्ण-रौप्याक्षरी संस्कृत के ४८ श्लोकों में लिखित छाजहड़ वंश की प्रशस्ति जो खरतरगच्छ की वेगड़ शाखा से संबंधित है, उसे यहाँ सानुवाद उद्धृत करता हूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लगभग अर्द्धशताब्दी पूर्व यह सचित्र प्रति सूरत नगर के श्री मोहन लाल जी महाराज के ज्ञान भंडार में थी। जब अहमदाबाद में साहित्यप्रदर्शनी हुई, तब वहाँ आई थी और उस समय प्रकाशित हुए प्रशस्तिसंग्रह में यह प्रशस्ति प्रकाशित हुई थी। न मालूम कब यह ग्रन्थ और प्रशस्ति वहाँ से निकलकर मद्रास में विक्रयार्थ आ गई ।

मैंने इस प्रशस्ति को आचार्य महाराज श्री विशालसेन सूरिजी की कृपा से बैंकलॉकर से मँगवाकर विर्ले पारले में नकल की। इसमें एक पूरे पत्र में आचार्य महाराज का सुंदर चित्र देखा है, पूरी प्रति मैंने नहीं देखी।

कल्पसूत्रप्रशस्ति

।।ॐ।। नमो श्रीजिनचन्द्रसूरिगुरुभ्योनमः
श्रेयःसंपत्तिवल्लीविपुलजलधरं पार्श्वनाथं जिनेशं,
नत्वा संसेव्यमानं सुरनरनिकरैर्भासुरैर्भक्तिमद्भिः।
मुक्तं दोषैरशेषैर्जिनवरवृषभं वारिदस्थायकायं,
कुर्वेहं पुस्तकेऽस्मिन् भविकजनमनप्रीतये सत्प्रशस्तिः।।१।।

श्रेय और सम्पत्तिरूपी वल्ली के लिए विपुल जलधर के सदृश पार्श्वनाथ भगवान को नमस्कार कर भक्तिमान् तेजस्वी देवों और मानववृन्द से पूज्यमान, मेघ की भाँति विशाल काया वाले, ऋषभनाथ जिनेश्वर को नमन कर भव्यजनों के मन को प्रीति देने वाली इस पुस्तक (कल्पसूत्र) की प्रशस्ति (की रचना) करता हूँ।

ऊकेशवंशे प्रवरो विभाति, सर्वेषु वंशेषु रमाप्रधानम्।
तस्मिन् सुगोत्रं प्रवरं प्रशस्यते नाम्ना महच्छज्जहड़ाभिधानम्।।२।।

ओसवाल वंश सभी वंशों में महान् व धनाढ्यों में प्रधान है, उसमें प्रशस्त छाजहड़ नामक सुगोत्र है।

क्षत्रियवंशः पूर्व्वं विदितः श्रीराष्ट्रकूट इति नाम्ना।
श्री जयचन्द्रो राजा जातश्चतुरङ्गबलयुक्तः ।।३।।

पहले क्षत्रियों में सुविदित श्री राष्ट्रकूट (राठौड़) नामक वंश में चतुरंगिणी सेनाबलयुक्त श्री जयचन्द्र राजा हुआ।

तस्यान्वये प्रसिद्धः त्यागी भोगी सदाश्रियः।।
आस्थान स्थैर्ययुतः संजातो....थुधुर्यः।।४।।

उनकी वंशपरंपरा में त्यागी, भोगी, लक्ष्मीसंपन्न आस्थानजी प्रधान स्थिरता वाले हुए।

त्रयोदशमहीपालाः तत्पुत्राः धांधलादयाः।
वंशो येषां धरापीठे वरा विस्तरितः श्रियः।।५।।

उसके धांधल आदि तेरह पुत्र महीपाल/राजा पृथ्वीपीठ के विस्तारक हुए।

धांधलस्याङ्गजः श्रेष्ठः ऊदलाह्वोनरेश्वरः।
तन्नंदनो रामदेवो रामदेव इव श्रिया।।६।।

धांधल का पुत्र ऊदल नामक श्रेष्ठ नरेश्वर हुआ, जिसका पुत्र रामदेव रामदेव की भाँति धनिक हुआ।

तत्पुत्र प्रवरश्चासीत् ठाकुरात्सिंह नामकः ।
गुरो समीपतो येन प्राप्तं श्राद्धत्वमुज्ज्वलम् ।।७।।

उसका प्रवर (बड़ा पुत्र) ठाकुरसिंह नामक हुआ, जिसने गुरु महाराज के पास उज्ज्वल श्रावकत्व प्राप्त किया।

ब्रह्मनामा बभूवाथ पुण्यकर्म्मणि कर्म्मठः।
तत्सुतः संप्रतिर्जज्ञे सत्त्यागैक प्रधानधीः।।८।।

पुण्यकार्य करने में कर्मठ ब्रह्म नामक उसका पुत्र हुआ, जो त्यागी और प्रधान बुद्धिवाला था।

श्रीमत्खेड़पुरे रम्ये सदुद्धरणनामकः
व्यवहारी श्रियाहारी धनेन धनदोपमः ।।९।।

श्रीखेड़ नामक सुंदर नगर में धनद के सदृश धनिक सद् - (उत्तम)-उद्धरण श्रेष्ठ व्यापारी हुआ।

चित्रकूटे पुरे रम्ये पार्श्वभवने योऽकारयद्वारम्।
सौवण्णां वलभीं जजे तस्माच्छाहड़ाभिधा ।।१०।।

इसने चित्तौड़ नगर में श्री पार्श्वनाथ के रम्य भवन में श्रेष्ठतम स्वर्णमय छज्जे बनवाए जिससे छाजहड़ (गोत्र) का नाम हुआ।

श्री शान्तिपुरे भवनं खेड़ापुर्यां येनात्र कारितम् ।
प्रतिष्ठा विहिता तत्र श्रीजिनपतिसूरिभिः ।।११।।

इसी ने खेड़नगर में सुंदर शान्तिनाथ भवन बनवाया जिसकी प्रतिष्ठा श्री जिनपतिसूरि महाराज ने की।

तेषां वासं गृहीत्वाथाभवन् खरतरः स तु।
अनेकधर्म्मकर्म्माणि कृतवान्निजवित्ततः।।१२।।

उन गुरु महाराज से वासक्षेप ग्रहण कर वह खरतर हो गया। उसने अपने वित्त द्वारा अनेक धर्मकार्य किए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्पुत्राऽथ कुलधर कुलभारधुरन्धरः
प्रौढप्रतापसंयुक्तः शत्रूणां तपनोपमः।।१३।।

उनका पुत्र कुलधर हुआ जो कुलभार वहन करने में धुरंधर, प्रौढ़ प्रतापी और शत्रुओं के लिए तपनोपम था।

श्रीजावालपुरे भिन्नमाले श्री वाग्भटे तथा
प्रासादा कारिता तेन निजवित्तव्ययोद्वराः।।१४।।

श्री जावालपुर भीनमाल, बाड़मेर में उसने अपने न्यायोपार्जित वित्त से प्रासाद बनवाए।

तत्सूनुरजितो जातः सामंतस्तु तदंगजः
हेमाभिधः श्रियायुक्तः सुनुर्बीदाविधस्ततः।।१५।।

उसका पुत्र अजित तत्पुत्र सामंत हुआ जिसका पुत्र हेमा और उसका पुत्र बीदा नामक हुआ।

तत्पुत्रौ भुवने ख्यातौ मालामलयसिंहकौ।
मालापुत्रो जूठिलाह्वः कालू नामा तदंगजः।।१६।

उसके दो पुत्र माला और मलयसिंह विश्वविख्यात हुए। माला का पुत्र जूठिल और उसका पुत्र कालू हुआ।

सूनुर्मलयसिंहस्य मंत्री झांझणनामकः
सन्मोहणदेवधरः भादूभ्रातृविराजितः।।१७।।

मलयसिंह का पुत्र झाँझण मंत्रीश्वर हुआ जो मोहन, देवधर और भादू भाइयों से सुशोभित था।

झांझणस्यसुतः श्रेष्ठः श्रीमत्सत्यपुरे वरे
चाह्वानभीमराजेन्द्रराज्यभारधुरन्धरः।।१८।।

झांझण का पुत्र सत्यपुर (साचौर) में श्रेष्ठ था, जो चौहान भीमनरेश्वर की राज्यधुरा का वाहक था।

शत्रुञ्जये महातीर्थे येन यात्रा कृता वरा।
श्रीसघं मेलयित्वा च स्ववित्तं सफलीकृतम्।।१९।।

इसने शत्रुञ्जय महातीर्थ का संघ निकालकर तीर्थयात्रा कर अपने धन को सफल दिया।

निजदानेन येनात्र कल्पवृक्षाःतिरस्कृताः
यशो यदीयं सर्वत्र विस्तीर्णं भूमिमण्डले।।२०।।

दान के द्वारा जिसने कल्पवृक्ष को भी तिरष्कृत कर दिया था। उसकी यशकीर्ति भू-मंडल में विस्तृत हुई।

श्री मद्वेगड़नासौ संजातः कुलमण्डनम्।
यस्यानुजः सिंगड़ाह्वः श्रीजिनेश्वरसूरिराट्।।२१।।

यह श्रीमद् वेगड़ नामक कुलमण्डन हुआ जिसका अनुज सिंगड़ नामक का था जो श्री जिनेश्वरसूरिराट् हुआ।

वील्हणदे नामिकास्या पूर्वपत्नी प्रशस्यते।
भरतो भरमश्चापि भोजो भट्टाभिधः सुता।।२२।।

वील्हणदे नामक प्रथम पत्नी थी जिसके भरत, भरम, भोजा और भट्ट नामक पुत्र हुए।

परा कुतिगदेनाम्नी शीलालंकारधारिणी
तत्कुक्षिपद्मिनो हंसौ पुत्रौ द्वौ महिमाद्भुतौ ।।२३।।

दूसरी कौतिगदे नामक शीलालंकारधारिणी पत्नी थी जिसके कोखरूप पद्मसरोवर से हंससदृश दो महिमाशाली पुत्र हुए।

आद्य सूराभिधो मंत्री प्रसिद्धो धरणीतले।
दानी मानी कलाशाली वदान्यो राजपूजितः।।२४।।

प्रथम सूरामंत्री पृथ्वी में प्रसिद्ध है जो दानी मानी कलाशाली व राजमान्य है।

कलाकलापसंयुक्तः मंत्री भुवनपालकः।
द्वितीयस्त्वभवत्पुत्रो धनवान् धर्मकर्म्मकृत्।।२५।।

कलाकलाप संयुक्त मंत्री भुवनपाल दूसरा पुत्र है, जो धर्मकार्य करने वाला तथा धनवान है।

श्री जिनधर्मसूरीणां पदस्थापनमादरात्।
येनाकारि स्वसंपत्या महेवलपुरोत्तमे।।२६।।

जिसने श्री जिनधर्मसूरि का पदस्थापना-महोत्सव महेवा नामक उत्तम नगर में आदरपूर्वक स्वधन सम्पत्ति द्वारा किया।

भार्या भुवनपालस्य कर्णादेवी मनोहरा।
तस्याश्चत्वारः सत्पुत्राः सुपुत्रीपंचममुत्तमम्।।२७।।

भुवनपाल की भार्या कर्णादेवी मनोहरा थी,उसके चार सुपुत्र और पाँचवीं उत्तम पुत्री हुई।

प्रथमो धनदत्ताह्वः गांगदत्तस्तथापरः
शिवनामा तृतीयस्तु तुर्यः संग्राम इत्यमी।।२८।।

पहला धनदत्त, दूसरा गांगदत्त तीसरा शिव और चौथा संग्राम है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेषां मध्ये पुण्यात्मा गांगदत्तो गुणाधिकः।
नाम्ना गेलमदेवी भार्या तस्य प्रजायतः।।२९।।

इनमें पुण्यात्मा गांगदत्त गुणों में विशिष्ट है, जिसकी भार्या गेलम देवी हुई।

तत्कुक्षिशुक्तिमुक्तायाः पुत्राः पञ्च गुणोज्जवलाः।
राजसिंहः श्रियाशाली मंत्रीशो राजवल्लभः।।३०।।

उसकी कोख रूपी सीप में मोती के सदृश पाँच गुणवान पुत्र हुए। राजसिंह मंत्रीश्वर राज्य में वल्लभ और क्रियाशाली था।

जसामिधानः राणाह्वः मंत्री दूदाभिधस्तथा।
महीकर्ण इतिख्याताः सर्वे सर्वत्र भूतले।।३१।।

जसा, राणा, मंत्री दूदा एवं महीकर्ण ये सभी पृथ्वी तल में प्रसिद्ध हुए।

तन्मध्यमंत्रीवर्यवस्तु राजसिंहो विशेषतः
त्यागी भोगी यशस्वी च श्रीमान् कुलविभूषणम्।।३२।।

इनमें मंत्रीश्वर राजसिंह विशेषतः त्यागी, भोगी, यशश्वी व कुलभूषण श्रीमान् था।

पदस्थापना कर्मादिपुण्यकार्याण्यनेकशः।
कृतानीह पुनःकर्त्ता सम्पत्तेरनुमानतः।।३३।।

इसने अपनी सम्पत्ति के अनुसार पदस्थापनोत्सवादि पुण्य कार्य अनेक बार किए।

भार्या राजलदेवीति सतीकुलमत्तिलका।
चम्बगोत्रीयभोजाह्वनन्दिनीगुणबंधुरा।।३४।।

उसकी भार्या राजलदेवी चम्बगोत्रीय भोजशाह की पुत्री गुणविशिष्टा, सतीकुलतिलका थी।

तस्याःकुक्षौ सुरत्नानि रत्नभूमौ यथास्फुटम्।
पुत्रा रत्नान्यजायन्त तन्नामानि यथाक्रमम्।।३५।।

उसकी रत्नगर्भा कोख से पुत्ररत्न जन्मे जिनके नाम क्रमशः कहते हैं।

आद्य सत्ताभिधो मंत्री सौंदर्यादिगुणान्वितः
सक्तादेवी प्रिया तस्य विद्यते गुणसंयुता।।३६।।

पहला सत्ता नामक मंत्री गुणशाली था उसकी प्रिया सक्ता देवी बड़ी गुणवती है।

पत्तामिधः सुपुण्यात्मा पाबू नाम्नीति तत्प्रिया।
नेताभिधानः सत्पुत्रं प्रिया नवरंगदे इति।।३७।।

पत्ता नामक पुण्यात्मा की पत्नी पाबू नाम की है। उसके सुपुत्र नेता की प्रिया नवरंगदे हैं।

तुर्यश्चतुर्थनामासौ भार्यारूपीति नामिका।
चाचाभिधानो देसूरु लघुपुत्रद्वयं वरः।।३८।।

चौथा नामके चतुर्थ पुत्र की भार्या रूपी नाम की है। चाचा नामक तथा देसूरु नामक दो श्रेष्ठ लघु पुत्र हैं।

प्रथमा पुत्रिका येठी, रंगी नाम्नी द्वितीयका।
चंगी नाम्नी तृतीया तु, पुत्रीतृतयमुत्तमम्।।३९।।

पहली पुत्री जेठी, दूसरी रंगी, तीसरी चंगी, तीन श्रेष्ठ पुत्रियाँ हुई।

तेनेदं राजसिंहेन परिवारयुतेन च।
सौवर्णाक्षरै श्रेष्ठं श्रीकल्पागमपुस्तकम्।।४०।।

उस राजसिंह ने सपरिवार यह कल्पागम की श्रेष्ठ पुस्तक स्वर्णाक्षरों में (लिखवाई)।

श्रीमत् खरतरगच्छे श्रीजिनदत्तसूरयः।
तेषामनुक्रमे जात श्रीजिनकुशलनामकः।।४१।।

श्री खरतरगच्छ में जिनदत्तसूरि जी हुए। उनकी परंपरा में अनुक्रम से श्रीजिनकुशल नामक (सूरि) हुए।

श्रीजिनपद्मसूरीन्द्रो जिनलब्धिस्ततः प्रभुः।
श्रीजिनचन्द्रसूरीशस्तत्पट्टोद्धरणः प्रभुः।।४२।।

श्री जिनपद्मसूरि, श्री जिनलब्धिसूरि के पट्टप्रभाकर श्री जिनचन्द्रसूरि हुए।

श्री जिनेश्वरसूरीन्द्रो विख्यातो जगतीतले।
तत्पट्टे प्रगटश्चासीत् श्री जिनशेखरसूरिराट्।।४३।।

श्री जिनेश्वरसूरि जगत्प्रसिद्ध हुए, उनके पट्टपर श्री जिनशेखरसूरिराज हुए।

तत्पट्टाभरणं श्रीमान् श्रीजिनधर्मुनीश्वरः।
तस्याणुर्जिनचन्द्राख्यसूरिस्तस्योपदेशेन।।४४।।

उनके पट्ट पर श्री जिनधर्मसूरीश्वर, फिर शिष्याणु श्री जिनचन्द्रसूरि हुए, जिनके उपदेश से –

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्रीमद्विक्रमतोषट्वेदेषु ( ) शशि संख्यया।
वत्सरेआश्विने मासे लिखापितमिदं महत् ।।४५।।

श्री विक्रमादित्य के संवत् १५४६ में आश्विन मास में यह महान् (कल्पसूत्र) लिखवाया।

सौवर्ण्णे (र) जतश्चापिऽक्षरैर्युक्तं चित्रश्रेणिविराजितम्।
शुद्धसूत्रार्थसंयुक्तं पुस्तकं जयतादिदम्।।४६।।

स्वर्ण और रजताक्षर युक्त चित्रश्रेणि से विराजित शुद्धसूत्रार्थ - संयुक्त यह पुस्तक जयवंत हो।

पुण्यवृद्ध्यै समृद्ध्यैच वाच्यमानं सदाभवेत्
मंत्रीशराजसिंहस्य श्रीकल्पागमपुस्तकम्।।४७।।

मंत्रीश्वर राजसिंह से लिखाया गया, सदा वाच्य मान यह कल्पागम ग्रन्थ पुण्यवृद्धिकारक एवं समृद्धिकारक हो।

यावद्धरा वरो मेरुश्चन्द्रसूर्यौ ध्रुवस्तथा
श्रीकल्पपुस्तकं तावद्वाच्यमानं तु नंदतात्।।४८।।

जहाँ तक पृथ्वी, श्रेष्ठ मेरु पर्वत व चन्द्र सूर्य और ध्रुव हैं, यह कल्पसूत्र ग्रन्थ बांचा जाता हुआ आनंद दे।

।।इति कल्पपुस्तकप्रशस्तिः ।।शुभंभवतु ।।श्री छहः।। संवत् १५४७ वर्षे आसो सुदि १० दिनवा. क्षमामूर्ति गणि उद्यमेन लिखितं जो. बडूआकेन । मं. राजसिंह कल्पपुस्तकं। शुभं भवतु।

(यह १०० पत्रमय ६० के लगभग चित्रों वाला कल्पसूत्र श्री विशालसेन सूरिजी ने मद्रास में चालीस हजार में प्राप्त किया था। प्रशस्ति के चार पत्र दो वर्ष बाद ग्यारह हजार में लिए।)

छाजहड़ गोत्र के दीक्षित आचार्य

कलिकाल-केवली श्री जिनचन्द्रसूरि

खरतरगच्छ में श्री जिनप्रबोधसूरि के पट्टधर श्री जिनचन्द्रसूरि जी महाराज गढ़ सीवाणा (समियाणा) के मंत्री देवराज के पुत्र थे। आपकी माता का नाम कोमल देवी था। आपका जन्म सं. १३२४ मिती मार्गशीर्ष सुदि ४ को हुआ। सं. १३३२ मिती जेठ सुदि ३ को श्री जिनप्रबोधसूरि से दीक्षित हुए। आपका नाम क्षेमकीर्ति रखा गया। आपका जन्मनाम खेमराय था। आप बड़े विद्वान् और प्रभावक आचार्य थे। आप कलिकाल-केवली विरुद् से प्रसिद्ध थे। जैसलमेरनरेश गणदेव, जैत्रसिंह, समियाणा के राजा समरसिंह और शीतलदेव आप ही के परम भक्त थे। दिल्ली सम्राट् कुतुबुद्दीन को आपने अपने सद्गुणों द्वारा चमत्कृत किया था। आपने अपने जीवन में शासन-प्रभावना के अनेक कार्य दीक्षा, प्रतिष्ठा, संघयात्रा, पदवी-प्रदान आदि अपने शासन -काल में किए थे। जिसके लिए युगप्रधानाचार्य-गुर्वावली देखनी चाहिए। सं. १३४३ वैशाख सुदि १० के दिन जावालिपुर में सूरि पद प्राप्त किया और सं. १३७६ मिती आषाढ़ सुदि ९ को कोसवाणा में स्वर्गवासी हुए।

प्रकटप्रभावी दादाश्री जिनकुशलसूरि

कलिकालकेवली श्री जिनचन्द्रसूरि के पट्ट पर उनके भतीजे कुशलकीर्ति जो मंत्रीश्वर जेसल (जिल्हागर) की पत्नी जयतश्री के पुत्र थे, विराजमान हुए। इनकी दीक्षा सं. १३४६/७ में तथा सूरिपद सं. १३७७ में पाटण में श्री राजेन्द्रचन्द्राचार्य द्वारा मंत्री कर्मचन्द्र के पूर्वज तेजपाल रुद्रपाल द्वारा पट्ट महोत्सव सम्पन्न हुआ। आपके द्वारा दीक्षा, प्रतिष्ठा, संघयात्रादि बड़े-बड़े कार्य प्रचुर परिणाम में सम्पन्न हुए। शत्रुञ्जय की प्राचीन खरतरवसही का अद्वितीय कलापूर्ण जिनालय आपके द्वारा प्रतिष्ठित है। सिंध प्रांत में विचर कर धर्मप्रभावना करते हुए सं. १३८९ मिती फाल्गुन बदि ५ या १५ को देरावर में स्वर्गवास हुआ। आप तीसरे दादा साहब नाम से प्रकट प्रभावी हैं । सारे भारत में आपके चरण व मूर्तियाँ सैकड़ों दादावाड़ियों और जिनालयों में प्रतिष्ठित हैं। आप छोटे दादाजी के नाम से प्रसिद्ध हैं और भक्तजनों का मनोवांछित पूर्ण करने में कल्पवृक्ष के तुल्य प्रकटप्रभावी हैं। सैकड़ों स्तवन-स्तोत्र व पूजाएँ अहर्निश गीयमान हैं।

श्री जिनपद्मसूरि

ये छाजहड़गोत्रीय अम्बदेव के पुत्र थे। सं. १३८४ माघ सुदि ५ को दादा श्री जिनकुशलसूरि द्वारा दीक्षित हुए, पद्ममूर्ति नाम प्रसिद्ध हुआ। ये बाल्यकाल में ही सरस्वती की कृपा से बड़े विद्वान् हो गए। तृशृंगम नरेश रामदेव की सभा में अपनी प्रतिभा से सभी विद्वानों को चमत्कृत किया। सं. १३९३ तक की तीर्थयात्रा, दीक्षा आदि के वृतान्त गुर्वावली में हैं। सं. १४०० में आपका स्वर्गवास हुआ। आपके पट्ट पर आषाढ़ बदि १ को श्री जिनलब्धिसूरि विराजित हुए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री जिनचन्द्रसूरि

श्री जिनलब्धिसूरि के पट्टधर श्री जिनचंद्रसूरि सं. १४०६ माघ सुदि १० को बैठे। मारवाड़ के कुसुमाण (कोसवाणा) गाँव के मंत्री केल्हा छाजहड़ की पत्नी सरस्वती के पुत्र थे। आपका नाम पातालकुमार तथा दीक्षा नाम यशोभद्र हुआ। सं. १३८१ वै.ब. ६ को पाटण में प्रतिष्ठा के समय बड़ी दीक्षा हुई। सं. १४१४ मिती आषाढ़ बदि १३ को स्तम्भतीर्थ में स्वर्गवासी हुए।

श्री जिनभद्रसूरि

ये देउलपुर मेवाड़ के छाजहड़ धीणिग की पत्नी खेतल देवी के सुपुत्र थे। इनका जन्म नाम रामणकुमार था। ये बड़े विद्वान और प्रभावक आचार्य थे। सं. १४७५ मिती माघ सुदि १५ को श्री जिनराजसूरि जी के पाट पर विराजे। इन्होंने ७ स्थानों में ज्ञानभंडार स्थापित किए व अनेक जिनालयों, प्रतिमाओं की प्रतिष्ठा की। जैसलमेरनरेश वैरिसिंह और त्र्यंबकदास आदि राजागण आपके भक्त थे। श्री भावप्रभाचार्य और श्री कीर्तिरत्नसूरि को आपने आचार्यपद दिया। चालीस वर्ष के आचार्य काल में आपने बड़ी शासन-सेवा की। सं. १५१४ मार्गशीर्ष बदि ९ में कुंभलमेर में आपका स्वर्गवास हुआ।

श्रीजिनेश्वरसूरि

आप खरतर गच्छ की वेगड़ शाखा के प्रथम आचार्य थे। वेगड़ शाखा में भट्टारक पद छाजहड़गोत्रीय को ही दिया जाता था, ये छाजहड़ झांझण की धर्मपत्नी झबकू देवी के पुत्र थे। आपने छह मास पर्यंत बाकुला और एक लोटा जल की तपश्चर्या द्वारा कराही देवी को प्रसन्न किया था। सं. १४०९ में स्वर्णगिरि पर महावीर जिनालय और सं. १४११ में श्रीमाल नगर में प्रतिष्ठा कराई। सं. १४१४ में आचार्य पद प्राप्त किया। पाटण में खान का मनोरथ पूर्ण किया। राजनगर के बादशाह महमूद वेगड़ा को बोध दिया। बादशाह ने समारोहपूर्वक पदोत्सव किया। आपके भ्राता ने ५०० घोड़ों का दान दिया और एक करोड़ द्रव्य व्यय किया। बादशाह ने 'वेगड़' विरुद् दिया तब से छाजहड़ वेगाड़ा भी कहलाए। बादशाह ने कहा-"मैं भी बेगड़ तुम भी बेगड़, बेगड़ गुरु गच्छ नाम। सेवक गच्छ नायक सही बेगड़, अविचल पामो ठाम"।।

ये शक्तिपुर (जोधपुर) में सं. १४३० में अनशनपूर्वक स्वर्ग पधारे। वहाँ स्तूप बनवाया जो बड़ा चमत्कारी है। सं. १४२५ और १४२७ में प्रतिष्ठाएँ कराई थीं।

जिनशेखरसूरि

सं. १४५० में आचार्यपद प्राप्त कर प्रभावक और प्रतापी बने। महेवा के राठौड़ जगमाल पर गुजरात के बादशाह की फौज आने पर अभिमंत्रित सरसों और चावल द्वारा घोड़े और सवार पैदा कर युद्ध में विजयी बनाया। बीबी ने कहा -

पग पग नेता पाड़िया, पग पग पाड़ी ढाल।
बीबी पूछे खान ने जग केता जगमाल।।

बादशाह को गुरु के पास लाने पर आन मना के छोड़ दिया। सं. १४८० में महेवा में स्वर्गवासी हुए।

श्रीजिनधर्मसूरि

आप सं. १४८० मिती ज्येष्ठ सुदि १०, गुरुवार को श्री जिनेश्वरसूरि के पाट पर बैठे। आपने अनेक जगह प्रतिष्ठाएँ कराईं, ग्रामानुग्राम विचरे, तीर्थयात्राएँ कीं। जयानंदसूरिजी को आचार्य पद दिया। सूराचंद के निकट रायपुर में महावीर जिनालय की सं. १५०९ में प्रतिष्ठा की। राणा घड़सी को प्रतिबोध देकर श्रावक बनाया। राणा ने घड़सीसर व कालूमुहता ने कालूसर कराया। महेवा में भी वणवीर ऊदा ने महोत्सव किया। रावलजी वंदनार्थ आए। पट्टावली में बिहार का विस्तृत वर्णन है। सं. १५१२ में मंत्री समर सरदार ने प्रतिष्ठा करवाई। मंत्री जेसंघ और उसकी भार्या जमना देने अपने पुत्र देदा को समर्पित किया। सं.१५१३ में जेसलमेर पधारे, रावल देवकरण सन्मुख आए। मंत्री गुणदत्त ने बिम्ब प्रतिष्ठा कराई। रावलजी ने नया उपाश्रय बनवाया। देदा को दीक्षा दी, दयाधर्म नाम प्रसिद्ध किया। जेसलमेर में पानी बरसाकर अकाल मिटाया।

· १५२३ में मंत्री गुणदत्त मं. राजसिंह ने आषाढ़ में नंदि महोत्सव पूर्वक जयानंदसूरि से आचार्य पद दिलाकर जिनचंद्रसूरि को पट्टधर किया। श्रावण में जिनशेखर सूरि स्वर्गवासी हुए। सं. १५२५ में आषाढ़ सुदि १० को स्तूप-प्रतिष्ठा हुई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

श्री जिनचन्द्रसूरि

आप मंत्री कुलधर के वंशज थे। दीक्षा का वर्णन ऊपर आ गया है। आपके मारवाड़ कच्छ, गुजरात देश में विचरने एवं तीर्थयात्रा करने का पट्टावली में उल्लेख है। समियाणा (गढ़सीवाणा) के राणा देवकरण स्वागतार्थ आए। श्री जयरत्नसूरि ने आचार्य पद दिया, वन्ना गुणराज ने महोत्सव किया। जयरत्नसूरि को देश संभलाकर जोधपुर, तिमरी, सातलमेर होते हुए जेसलमेर पधारे। कालू मंत्री के वंशज मंत्री सीहा के पुत्र मं. समधर, समशेरसिंह ने प्रवेशोत्सव किया। गणधर वसही की भरतप्रतिमा सीहा-समधर ने बनवाई थी, प्रतिष्ठा की। श्री महिमा मंदिर को, अपने पाट पर स्थापित कर श्री जिन मेरुसूरि नाम प्रसिद्ध किया। पौ १५५९ सं. ब. १० को स्वर्गवासी हुए।

श्री जिनमेरुसूरि

छाजहड़गोत्रीय समरथ साह की पत्नी मूला देवी की कोख से आपका जन्म हुआ। दीक्षा का नाम महिमामंदिर था। ये राजस्थान, गुजरात और सिंध में विचरे। जयसिंह सूरि को आचार्य पद व भावशेखर, देवकलोल, देवसुंदर, क्षमासुंदर को उपाध्याय पद एवं ज्ञानसुंदर, क्षमामूर्ति, ज्ञानसमुद्र को वाचक पद दिया। विहारक्षेत्र व जीवनी का वर्णन पट्टावली में है।

श्री जिनगुणप्रभसूरि

वेगड़ गच्छ पट्टावली में इनकी जीवनी विस्तार से दी गई है एवं गुणप्रभसूरि-प्रबंध भी उपलब्ध है। ये छाजहड़गोत्रीय जूठिल कुलशृंगार नगराज नागलदे के पुत्ररत्न थे। त्रिपुरा देवी के संकेत से इन्हें दीक्षा दी गई। सं. १५६५ मार्गशीर्ष चतुर्थी गुरुवार को जन्म, सं. १५७५ में दीक्षा व सं १५८२ में जोधपुर में फाल्गुन सुदि ४ को पट्टाभिषेक हुआ। जोधपुर के गंगेवराव, जेसलमेर के रावल, इनके भक्त थे। ये बड़े प्रभावक थे। अनेक चमत्कारों का वर्णन पायां जाता है। अकबर-प्रतिबोधक श्री जिनचंद्रसूरि (चौथे दादा साहब) को इन्होंने ही सं. १६१२ में सूरिपद दिया था, रावल मालदेव ने पट्टाभिषेकोत्सव किया। मंत्री राजसिंह के संघ सहित तीर्थ यात्राएं कीं। दुष्काल के समय वर्षा के लिए श्री धरणेन्द्रादि का आह्वान कर वर्षा कराई। रावल लूण करण ने मोतियों से वधाया अनेक चमत्कारपूर्ण जीवनी के लिए पट्टावली देखनी चाहिए। सं. १६५५ वैशाख बदि ८. को तिविहार ग्यारस को संधारा कर १५ दिन की संलेखना पूर्ण कर ९० वर्ष ५ माह ५ दिन का आयुष्य पूर्णकर स्वर्गवासी हुए। आप बड़े प्रभावक आचार्य थे।

छाजहड़गोत्र के लेख (अभिलेख)

(नाहर २००८) सं. १४६४ वै. ब. ८ शनिवार उपवेश छा. गोत्रीय जूठिल वंशीय मंत्री निणा भा. नामलदे पुत्र मं. सीहा भा सूरमदे पुत्र मं. समधर भा. सक्तादे. पु. सदारंग कीका सहित श्रेयांसनाथ प्रतिमा खरतरगच्छीय श्री जिनचंद्रसूरि पट्टे श्री जिनमेरूसूरि से प्रतिष्ठा कराई।

२. (नाहर २१५९) सं. १५१३ माघ सुदि ३, सोमवार को उपकेश ज्ञातीय छाजहड़गोत्रीय मं. झूठा। ल सुत महं कालू भा. कर्मादि के पुत्र म. नोडने स्वपुत्र श्रेयांसनाथ बिंब कराके खरतरगच्छीय जयशेखर सूरि ने प्रतिष्ठा की।

३. (नाहर २१६९) सं. १५१३ मिती माघ सुदि ३ शुक्रवार उपकेशज्ञातीय छाजहड़गोत्र के मंत्री देवदत्त भार्या रयणादे के पुत्र मं. गुणदत्त भार्या सातलदे सहित धर्मनाथ बिंब बनवाकर खरतरगच्छ के आचार्य जिनशेखर सूरि पट्टे भ. श्री जिनधर्मसूरि से प्रतिष्ठा करवाई।

४. (नाहर २३६८) सं. १५८१ के माघ बदि ६ बुध को उपकेशवंशीय छाजहड़ गोत्रीय मंत्री कालू भार्या कर्मादि पुत्र म. रादे छाहड़ा नयणा सोना नोडा ने पितृ मातृ श्रेयार्थ श्री सुमतिनाथ बिंब बनवाके खरतरगच्छीय श्री जिन हंससूरि से प्रतिष्ठा कराई।

५. (नाहर २४०१) सं. १५३६ मिती फाल्गुन सुदि ५ भौमवार को उपकेशवंश के छाजहड़गोत्रीय मंत्री कुलधर संतानीय मं. जूढिल पुत्र मं. कालू भार्या कर्मा दे पु. नयणा भा. नामलदे के प्र.मंत्री सीहा की भार्या चोपड़ा सा.सवा के पुत्र सं. जिनदत्त भा..लखाई की पुत्री श्राविका अपूर्व नामक ने पुत्र समधर, समरा, संदू के साथ स्वपुण्यार्थ श्री आदिदेव के प्रथम पुत्र भरत चक्रवर्ती की कायोत्सर्गमय प्रतिमा बनवाई। श्री खरतरगच्छ के श्री जिनदत्तसूरि श्री जिनकुशलसूरि संतानीय श्री जिनचन्द्रसूरि, पं. जिनेश्वरसूरि शाखा के जिनशेखसूरि के पट्टधर श्री जिनधर्म्मसूरि पट्टे पूज्य श्रीजिनचन्द्रसूरि ने प्रतिष्ठा की (श्राविना सूरमदे कारित)

६. (नाहर २४३७) सं. १४३२ फाल्गुन सुदि ३ रविवार को उपकेश वंश के छाजहड़गोत्रीय सं. वेगड़ा श्रेयार्थ देवदत्त

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्र मं. गुणदत्त भार्या सोमलदे के पुत्र धर्मसिंह ने पुत्र समरथादि के परिवार सहित भार्या के पुण्यार्थ श्री नमिनाथबिंब बनवाकर श्री जिनधर्म्मसूरि के पट्टधर श्री जिनचंद्र सूरि से प्रतिष्ठा करवाई।

७. (नाहर २४४७) सं. १६७३ (चैत्रादि) मितीजेठ सुदि १५ सोमवार मूल नक्षत्र में जैसलमेर नगर में राउल श्री कल्याण जी के राज्य में खरतरवेगड़गच्छ के श्री जिनेश्वरसूरि के विजय राज्य में छाजहड़ गोत्रीय मं. कुलधरान्वये मं. वेगड़ पुत्र मं. सूरा तत्पुत्र मं. देवदत्त पुत्र मंत्री गुणदत्त पुत्र मं. सुरजन मं. चकमा, धरमसी, रत्ना, लखमसी मंत्री सुरजन पुत्र जीआ दसू। जीआ पुत्र मंत्री पंचाइण पुत्र मं. चांपसी म. उदयसिंह मं. ठाकुरसी। मं. टोडरमल पुत्र सोनापाल सहित उपाश्रय बनवाया। सूत्रधार पांचा अबाणी ने निर्माण किया।

८. (नाहर २५०६) सं. १६७४ चैत्र से ७५ वर्षे मार्गशीर्ष बदि के त्रुटित लेख में छाजहड़ काजल पुत्र उद्धरण पुत्र कुल धर अजित पुत्र माधव...

९. (नाहर २४७८) सं. १४६२ माघ बदि ८ शुक्रवार को ३० ज्ञा. छाजहड़गोत्रीय सं. जइत कर्ण भार्या दुलहदे पुत्र लखमण ने माता पिता के श्रेयार्थ शांति जिन प्रतिमा बनवाकर पल्लिगच्छीय श्री शांतिसूरि से प्रतिष्ठित करवायी।

१०. (नाहर २५०५) जेसलमेर श्मशान भूमि -

जेसलमेर के थंभप्रतिष्ठा कराने वालों के नामों की प्रशस्ति लिखते हैं--

ऊकेश वंश के छाजहड़ गोत्रीय पहले क्षत्रिय राठौड़ वंश के थे। राजा आस्थान के धांधल आदि १३ पुत्र हुए। धांधल का पुत्र ऊदिल उसका पुत्र रामदेव तत्पुत्र काजल वह संप्रति सेठ के गोद गया। उसने श्रावक धर्म स्वीकार किया। उसके अनुक्रम से ऊधरण हुआ। उसका पुत्र कुलधर, कुलधर का पुत्र अजित अजितपुत्र सामंता उसका पुत्र हेमराज, पुत्र बादा तत्पुत्र माला मलयसिंह नामक, माला पुत्र जूठिल पुत्र कालू प्रधान। चौहान घड़सी राजा का राज्यमंत्रीश्वर था। उसने रायपुर नगर में जिनालय बनवाया। उसकी पत्नी शीलालंकारधारिणी कर्मादे हुई। उसके ५ पुत्र थे-रादे, छाहड़, नेणा, सोनपाल, नोड राजा एवं अरथू नामक बहिन थी। इनमें सोनपाल मंत्रीश्वर उसकी भार्या सं.,थाहरू की पुत्री सहजलदे थी। उसने तीन पुत्र रत्न जन्मे । मंत्री सतोपाल प्रिया चांपल दे। द्वितीय देपाल उसकी प्रिया दाडिम दे, तीसरा महिराज जिसकी प्रिया महिगल दे थी। इनमें मंत्रीश्वर देपाल दाडिम के तीन पुत्र १. उदयकर्ण, २. श्रीकर्ण, ३. सहस्त्रकिरण थे। सहस्त्रकिरण की भार्या सिरियादे। उसके पुत्र मंत्रीश्वर सूर्यमल मंत्री दीदा सूर्यमल की भार्या मूलादे की कोख से उत्पन्न मंत्री हरिश्चंद्र मंत्रीश्वर विजयपाल थे। मंत्री दीदा की भार्या श्रा. सवीरदे। पुत्र ३ हुए-१. मंत्रीश्वर हमीर, २. कर्मसिंह, ३. धर्मदास। हमीर मंत्रीश्वर की भार्या चांपलदे उसके विजयी पुत्र देवीदास मंत्री विजयपाल की भार्या विमलादे, उसका पुत्र मंत्रीश्वर तेजपाल हुआ। तेजपाल की भार्या कनका दे प्रभृति समस्त परिवार के साथ सं. १६६३ मार्गशीर्ष बहुल ६ सं.१६६३ सोमवार पुष्य नक्षत्र में ब्रह्मयोग में खरतरवेगड़गच्छ के श्री जिनेश्वर सूरि-जिनशेखरसूरि पट्टे जिनधर्मसूरि-जिनचंद्रसूरि पट्टेजिनमेरूसूरि पट्टे श्री जिनगुण प्रभसूरि गुरु के स्तूप की प्रतिष्ठा श्री जिनेश्वर सूरि ने की रावल भीमसेन के जेसलमेर राज्य में। श्री जिन गुणप्रभसूरि के शिष्य पं. मतिसागर ने पट्टिका लिखी मंत्री भीमा पुत्र मं. पदा पुत्र मं. माणिक ने १० देहरी को दिया। थंभ सिलावट अखा शिवदास हेमाणी ने किया। जसा वधूआणी सिलावट ने किया। समस्त छोटे बड़े संघों का कल्याण हो।

छाजहड़गोत्र

सं. १२१५ में मणिधारी दादा श्री जिनचन्द्र सूरिजी समियाणा गढ़ (गढ़ सीवाणा) पधारे, वहाँ राठौड़ आस्थान के पुत्र धांधल तत्पुत्र रामदेव का पुत्र काजल रहता था। काजल ने सूरिजी से कहा - "गुरुदेव! रसायन से स्वर्णसिद्धि की बात लोक में सुनते हैं, क्या यह सत्य है ?" गुरुदेव ने कहा "हम लोग सावद्य क्रिया के त्यागी हैं, अतः धर्मक्रिया के अतिरिक्त आचरण वर्ज्य है। " काजल ने कहा एक बार मुझे दिखाइये, धर्मवृद्धि ही होगी। सूरिजी ने कहा - "यदि तुम जैनधर्म स्वीकार करो तो मैं दिखा सकता हूँ।" काजल अपने पिता से पूछ कर जैन-श्रावक हो गया। सूरिजी ने दीवाली की रात्रि में लक्ष्मी मंत्र से अभिमंत्रित वासक्षेप देते हुए कहा - यह चूर्ण जिस पर डालोगे वही सोना हो जाएगा। यह प्रभाव केवल आज रात्रि भर के लिए है। काजल जैनमंदिर, देवी के मंदिर और अपने घर के छज्जों पर वासक्षेप डालकर सो गया। प्रातःकाल तीनों छज्जे स्वर्णमय देखकर बड़ा प्रसन्न हुआ। सभी लोग इस चमत्कार को देखकर आनन्दमग्न हो गए। काजल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ने गुरु महाराज से प्रतिबोध पाकर सम्यक्त्वसहित बारह व्रत स्वीकार किए। गुरु महाराज ने स्वर्णमय छाजों के प्रादुर्भाव से छाजहड़ गोत्र की स्थापना की।

उद्धरण छाजहड़

एक बार श्री जिनपतिसूरिजी ने अजमेर-चातुर्मास में रामदेव आदि के समक्ष प्रसंगवश खेड़निवासी उद्धरण शाह मंत्री की प्रशंसा की। रामदेव उद्धरण से आकर मिला। उसने सेठ रामदेव को बहुत ही सम्मानित किया। उसने मंत्री की पत्नी को जिनालय जाते समय छाबभर के साड़ियां आदि ले जाते देखा तो आश्चर्यपूर्वक नौकर से इसका कारण ज्ञात किया कि स्वधर्मी बहिनों को भेंट करने के लिए ये प्रतिदिन ले जाती हैं। राम देव उद्धरण के घर का आचार देखकर प्रसन्न हुआ। एक बार उद्धरण ने नागपुर में मंदिर-निर्माण कराया था। प्रतिष्ठा के लिए बुलाए आचार्य के न पहुँचने पर मंत्री पत्नी जो खरतरों की पुत्री थी, के कथन से चैत्यवालिया के पास प्रतिष्ठा न कराके सकुटुम्ब मंत्री खरतरगच्छीय श्रावक हो गया।

ऊपर सं. १२१५ में मणिधारी श्री जिनचन्द्रसूरिजी से छाजहड़ गोत्र उत्पन्न हुआ, लिखा है जब कि यहाँ उद्धरण छाजहड़ के द्वारा खरतरगच्छीय होने का उल्लेख है। इस विषय की एक प्रसिद्ध गाथा उद्धृत की जाती है--

'बारह सौ पणयाले विक्कमे वच्छरे वइक्कंते
उद्धरण केड पमुहा छाजहडा खरतरा जाया।'

उद्धरण ने खेड़ नगर में जिनपति सूरि से प्रतिष्ठा कराई जिसका ऊपर कल्पसूत्रप्रशस्ति में वर्णन है।

वेगड़ शाखा के जिनसमुद्रसूरि-रचित महाराजा अनूपसिंह जौर राठौड़ वंशावली संबंधी काव्य में छाजहड़-गोत्र संबंधी प्राप्त पद्य--

कुमर स्वरूप देखी काजल ज्यों नेत्र रेखी छाजड़े में सुविशेषी काजल दे नाम जू।
आणि के सेठ को दीनो, लहिणो सो दूर कीन्हों, दोहू को रह्यो अक्रीनो आवे निज धाम जू।।
बरहड़ीयां का गोत छाजड़े ते छाजड़ोत ऐसे गोत छाजड़ को भयो तिण ठाम् जू।
वदत समुंद महाराजश्री अनूपसिंह जी को काको करें काम वाको सरें काम जू।। ३८

काजल के वेर उद्धरण जू किए उद्धार सातवीस चैत्य खेड़ वीचि गुरु वेण जू।
श्री जिनपति सूरि प्रतिष्ठा करी पडूर मांड्यो विषवाद भूर वरडीये तेण जू।।
जीत्यो खरतरे सूर वेगड़ पडूर हारयो गुरु वरडीये कोले भये मैण जू।
वेगड़ कोले भाई छाजड़ दोनूं कहाई वृद्ध वंत हो सहाई जोलूं जिन जैन जू।।३९।।

छाजड़ में घालि दीनौ ताहूँ पै छाजड़ भये असल वरडीया तें छाजड़ कुमार जू।
पाटण पीरात मांझिसो तो सारो जग जाने कोलै पल्लीवाल सो तो पाइली मुझार जू।।
ताके पीछे खेड़वीचि वेगड़ विरुद धर्यो सर्यो मकसूद खरतरे सिरदार जू।
कलश दंड चढ़ाया वेगड़ विरुद पाया धराया ताते गच्छ चौरासीवे वेगडसिंगार जू।।४०।।

पहिला छाजड़ कोला वरडीया पल्लीवाल उवाँ का गुरु पल्लीवाल पल्ली शुभ थान जू।
बीजा वेगड़ प्रसिद्ध खेड़ में हुआ समृद्ध सातवीस देहरा कराया सुप्रधान जू।
सोवन कलश दंड मंडप मंड अखंड पातसाही सनाथ मेदनी मंडान जू
खेड़ पल्ली सोनगिरि गूजर जंगलधर गौरी गृह एने थान वेगड़े दीवान जू।।४१।।

श्री जिनेश्वरसूरि-गीत में

तूं वेगड़ विरुदे वडो, छाजहडा कुल छात्र हो,
गच्छ खरतर नो राजियो, तूं सींगड़ वड़ गात्र हो...३
परतो पूर्यो खान नो अणहिल वाड़इ मांहि हो
महाजन बंद मूकावियो, मेल्यो संघ उच्छाहि हो...६
आराधी आणंद सूं वाराही विपुराय हो
धरणेंद्र पिण परगट कियो, प्रगटी अति महिमाय हो....५
राजनगर नइं पांगुरया, प्रतिबोध्या महमद हो
पदढवणो परगट कियो, दुःख दुरजन गया रद हो...७
सीं गडसींग वधारिया, अति ऊंचा असमान हो
धीगड भाई पांच सइं, घोड़ा दीधा दान हो...८
सवा कोटि धन खरचीयो, हरख्यो महमद साह हो
विरुद दियो वेगड़ तणो, परगट थयो जग मांह हो ९ (हे.जै.का.से.पृ. ३१४)

श्री क्षेमराज उपाध्याय गीतसार

छाजहड़गोत्रीय लीलासाह की पत्नी लीलादेवी के पुत्र थे १५१६ में गच्छ नायक के श्री जिनचंद्रसूरि जी से दीक्षा ली। वा. सोमध्वज के शिष्य हुए। गुरुपरंपरा :- जिन कुशल-विनयप्रभ- विजयतिलक-क्षेमकीर्ति-क्षेमहंस- सोमध्वजशि. आपके तीन शिष्य थे, जिनमें प्रमोदमाणिक्य शि. जयशोम के शि. गुणविनय हुए। क्षेमराज की कृतियाँ--

१ उपदेशसप्ततिका (सं. १५४७ हिसार, श्रीमाल पपर वोदा आदि)
२. इक्षुकार चौपई गा. ५०
३. श्रावक विधि चौपई गा ७०, सं. १५४६
४. पार्श्वनाथ रास ना. २५
५. सीमंधरस्तवन　　　६. पार्श्वनाथ १०८ नाम
७. वरकाणा स्त. एवं स्तवन सज्झादि उपलब्ध हैं।

श्री जिनलाभ सूरिजी महाराज की पदस्थापना कच्छ के मांडवी बंदर में छाजहड़गोत्रीय शाह भोजराज कारित नंदी महोत्सवपूर्वक हुई थी।

आचार्य शाखा के (६५) जिनचंद्रसूरि का सं.११७४६ मार्गशीर्ष सुदि १२ को लूण करणसर में छाजहड़ रतनसी जोधाणी ने पदोत्सव किया था।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

क्षत्रिय वंश राठौड़ राजा जयचंद

वंशज आस्थान जी

थांधल आदि १३ पुत्र

ऊदल

रामदेव

ठाकुरसिंह - जैन बना

ब्रह्म

उद्धरण (खेड़पुर में हुआ, चित्तौड़ में पार्श्वभवः बनवाये, सोने के छज्जे करवाये जिसके छाज हड़ गोत्र हुआ। खेड़ में शान्तिनाथ जिनालय बनवाये श्री जिनपतिसूरि से प्रतिष्ठा कराके खरतक श्रावक हुआ।

कुलधर - इसने जावालपुर भिन्नमाल, बाहड़मेर में जिनालय बनवाये।

अजित

सामंत

बीदा

माला | मलयसिंह

माला

जूठिल

मंत्री कालू (मार्या कर्मा दे)

छाहड़ | नेणा | मं. सोनपाल (थाहरू पुत्री सहजबदे) | नोड़ | राजा | अरघू (पुत्री)

मं. सोनपाल:
सतोपाल (चांपल दे) | मं. देपाल (दाडिम दे) | महिराज (महिगल दे)

मं. देपाल:
उदयकर्ण | श्री कर्ण | सहसकिरण (सिरीया दे)

सहसकिरण:
मं. सूर्यमल (मूलादे) | दीदा (सवीर दे)

मं. सूर्यमल:
म. हरीश्चन्द्र | विजमाल (विमला दे)

विजमाल → तेजपाल (कनकादे)

दीदा:
हमीर (चांपल दे) | कर्मसिंह | धर्मदास

हमीर → देवीदास

(सपरिवार ने जिन गुणप्रभसूरि स्तूप पाहुका)
यह उसी के आधार पर

मलयसिंह

झांझण | मोहण | देवधर | भाहू

भाहू: गत्यपुर के राजा भीम का राज्यधुरा वाहक हुआ। शत्रुंजय का संघ निकाला।

झांझण:
बेगड़ | सींगड़ - जिनेश्वर सूरि हुए

बेगड़ → पत्नी २

द्वाल्हण दे | २ कैरतिग दे

द्वाल्हण दे:
भरत | भरम | भोज | भट्ट

कैरतिग दे:
१. सूरा मंत्री (दानी, मानी, कलाविद, राजमान्य) | २. भुवनपाल - महेवा (मार्या कण्णदिवी)

भुवनपाल:
१. धनदत्त | २. गांगदत्त (मार्या गेलम देवी) | ३. शिव | ४. संग्रस

गांगदत्त:
१. राजसिंह (चंजभोजा पुत्री राजलदे) | २. जसा | ३. राणा | ४. दूदा | ५. यहांकण

राजसिंह:
१. सत्ता (शक्कादे) | २. पत्ता पानू | ३. | ४. चौथा (मार्यारुणी) | चाचा | देसरू

पुत्री ३ (१ जेसी २ रंगी ३ चंगी)

पत्ता → नेता (नवरंग दे)

यहां केवल कल्प सूत्र प्रशस्ति और गुणप्रसूरि स्तूप के आधार से अपनी ''जेसलमेर के कलापूर्ण मंदिर'' पुस्तक के यहां वंश वृक्ष है। नाहर जी के लेख संग्रह के प्रतिमा लेखों में और भी बहुत नाम आये हैं। तथा अन्य लेख संग्रहों विस्तृत वंशवृक्ष तैयार हो सकता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org